27-11-78 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

अल्पकाल के नाम और मान से न्यारे ही सर्व के प्यारे बन सकते हैं

सदाकाल के लिए “इच्छामात्रम् अविद्या” बनाने वाले बाप-दादा बोले: -

आज बाप-दादा विशेष बच्चों से मिलन मनाने आए हैं, जैसे बच्चे निरन्तर योगी हैं अर्थात् बाप के स्नेह के सागर में सदा लवलीन हैं ऐसे ही बाप भी बच्चों के स्नेह में निरन्तर बच्चों के गुण गाते हैं - हर बच्चे की गुण माला और हर बच्चे के श्रेष्ठ चरित्र के चित्र बाप-दादा के पास हैं। बाप-दादा के पास बहुत बड़ा, बहुत सुन्दर चैतन्य मूर्तियों का मन्दिर कहो वा चित्रशाला कहो सदा सामने है। हरेक का चित्र और माला सदा बाप देखते रहते हैं। किन्हों की माला बड़ी है, किन्हों की छोटी है। तुम सबको तो एक बाप को याद करना पड़ता - बाप-दादा को सर्व बच्चों को याद करना पड़ता - एक को भी भूल नहीं सकते। अगर भूलें तो उल्हनों की माला पहननी पड़े। तो बच्चे उल्हनों की माला पहनाते बाप विजयी माला पहनाते - बहुत होशियार हैं बच्चे ! मदद लेने में होशियार हैं- हिम्मत रखने में नम्बरवार हैं - सुना तो बहुत है अब बाकी क्या करना है। अब तो सिर्फ मिलन मनाते रहना है। जैसे अभी का मिलन सम्पन्न स्टेज का अनुभव कराता है ऐसे निरन्तर मिलन मनाओ। सुनने का रिटर्न सदा बाप समान सम्पन्न स्वरूप में दिखाओ। अनेक तड़पती हुई आत्माओं के इन्तज़ार को समाप्त करो - सम्पन्न दर्शनीय मूर्त्त बन अनेकों को दर्शन कराओ। अब दु:ख अशान्ति की अनुभूति अति में जा रही है - उन्हें अपनी अन्तिम स्टेज द्वारा समाप्त करने का कार्य अति तीव्रता से करो। मास्टर रचता की स्टेज पर स्थित हो अपनी रचना के बेहद दु:ख और अशान्ति की समस्या को समाप्त करो - दु:ख हर्ता सुख कर्ता का पार्ट बजाओ। सुख शान्ति के खज़ाने से अपनी रचना को महादान और वरदान दो, रचना की पुकार सुनने में आती है! वा अपनी ही जीवन की कहानी देखने और सुनाने में बिज़ी हो ! अपने जीवन के कर्मों की कहानी जानने वाले त्रिकालदर्शी बने हो ना। तो अभी हर कर्म अन्य आत्माओं के कल्याण प्रति कार्य में लगाओ। अपनी कहानी ज्यादा वर्णन न करो - मेरा भी कुछ करो वा मेरा भी कुछ सुनो, मेरे फैसले करने में समय दो - अब अनेकों के फैसले करने वाले बनो - हरेक के कर्म गति को जान गति सद्गति देने के फैसले करो - फैसिलिटीज़ (Facilities) न लो - अब तो दाता बनकर दो - कोई भी सेवा प्रति वा स्वयं प्रति सैलवेशन के आधार पर स्वयं की उन्नति वा सेवा की अल्पकाल की सफलता प्राप्त हो जायेगी लेकिन आज महान होंगे कल महानता की प्यासी आत्मा बन जायेंगे। सदा प्राप्ति की इच्छा में रहेंगे। न्म हो जाए काम हो जाए इसके इच्छा मात्रम अविद्या स्वरूप न बन सकेंगे। जैसे बाप नाम रूप से न्यारे हैं तो सबसे अधिक नाम का गायन बाप का है - वैसे ही अल्पकाल के नाम और मान से न्यारे बनो तो सदाकाल के लिए सर्व के प्यारे स्वत: बन जायेंगे। नाम और मान के भिखारीपन का अंशमात्र भी त्याग करो - ऐसे त्यागी विश्व के भाग्य विधाता बन सकते। कर्म का फल खाने के अभ्यासी ज्यादा हैं - इसलिए कच्चा फल खा लेते हैं - जमा होने अर्थात् पकने नहीं देते। कच्चा फल खाने से क्या होता है ? कोई न कोई हलचल हो जायेगी। ऐसे ही स्थिति में हलचल हो जाती है। कर्म का फल तो स्वत: ही आपके सामने सम्पन्न स्वरूप में आयेगा। एक श्रेष्ठ कर्म करने का सौ गुणा सम्पन्न फल के स्वरूप में आयेगा लेकिन अल्पकाल की इच्छा मात्रम् अविद्या हो। त्याग करो तो भाग्य आपे ही आपके पीछे आयेगा। इच्छा - अच्छा कर्म समाप्त कर देती है। इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या। इस विद्या की अविद्या। महान ज्ञानी स्वरूप हैं - इसमें ज्यादा समझदार न बनना। यह होना ही चाहिए। मैंने किया, मुझे मिलना ही चाहिए - इसको इन्साफ न समझना। मेरा कुछ इन्साफ (न्याय) होना चाहिए। भगवान के घर में भी इन्साफ न हो तो कहाँ इन्साफ मिलेगा - कभी भी इन्साफ माँगने वाले नहीं बनना। किसी भी प्रकार के माँगने वाला स्वयं को तृप्त आत्मा अनुभव नहीं करेगा। तो सदा सर्व प्राप्तियों से तृप्त आत्मा बनो। ब्राह्मण जीवन का सलोगन है अप्राप्त नहीं कोई वस्तु मास्टर सर्व शक्तिमान के खज़ाने में। यह सलोगन सदा स्मृति में रखो। अब गुह्य ज्ञान के साथ-2 परिवर्तन भी गुह्य करो। मुश्किल लगता है क्या? अनेकों की मुश्किल को सहज करनेवाले हो सैलवेशन आर्मी हो।

ऐसे सदा महादानी वरदानी अल्पकाल की इच्छा मात्रम् अविद्या वाले स्वयं के त्यागी सर्व के भाग्य बनाने वाले विधाता, सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट रहने वाले, सर्व की समस्याओं का समाधान करनेवाले - ऐसे बाप समान महान आत्माओं को बाप-दादा का याद प्यार और नमस्ते।

दीदी और बृजेन्द्राजी से बातचीत

खिलाड़ी बनकर हर समय का खेल देखने में मज़ा आता है ना। खिलाड़ी की स्टेज सदा हर्षित मुख रहने का अनुभव कराती है। किसी भी प्रकार की कोई भी बात, जिसको दुनिया वाले आपदा समझते हैं लेकिन खिलाड़ी बन खेल करने वाले और खेल देखने वाले ऐसी आपदा के रूप को भी खेल को जैसे मनोरंजन अनुभव करेंगे। बड़े में बड़ी आपदा मनोरंजन दृश्य अनुभव हो - यह है मास्टर रचता की स्टेज। जैसे महाविनाश को भी स्वर्ग के गेट खुलने का साधन बताते हो - कहाँ महाविनाश और कहाँ स्वर्ग का गेट! तो महाविनाश की आपदा को भी मनोरंजन का रूप दे दिया ना - तो ऐसे किसी भी प्रकार की छोटी बड़ी समस्या वा आपदा मनोरंजन का रूप दिखाई दे। हाय-हाय के बजाए ओहो! शब्द निकले। इसको कहा जाता है अंगद के समान स्टेज। जो योगियों की स्टेज लोग वर्णन करते हैं - दु:ख भी सुख के रूप में अनुभव हो - दु:ख-सुख समान, निन्दा स्तुति समान। यह दु:ख है, यह सुख है - इसकी नॉलेज होते हुए भी दु:ख के प्रभाव में नहीं आओ। दु:ख की भी बलिहारी सुख के दिन आने की समझो। इसको कहा जाता है सम्पूर्ण योगी। परिवर्तन की शक्ति इसको कहा जाता है। दुश्मन को भी दोस्ती में परिवर्तन कर दें - दुश्मन की दुश्मनी चल न सके। दुश्मन बन आवे और बलिहार बनकर जावे। यह है शक्तियों की महिमा। ऐसे शक्ति सेना तैयार है! जब विश्व को परिवर्तन करने की चैलेन्ज करते हो तो यह क्या बड़ी बात है - इसका सहज साधन है - लेने वाला नहीं लेकिन देने वाला दाता बनो। दाता के आगे सब स्वयं ही झुकते हैं।

वैसे भी कोई चीज़ दो तो वह अपना सिर और आंखे नीचे कर लेते हैं - निर्माणता दिखाने लिए ऐसे करते हैं। वह स्थूल युक्ति है और यहाँ संस्कार स्वभाव से झुकेंगे। तब तो दुश्मन भी बलिहार जायेंगे। तो ऐसी शक्ति सेना तैयार है! (बृज को) बाम्बे ले आई हो ना - बाम्बे की सेना ऐसे तैयार है! फर्स्ट चान्स बाम्बे को मिला है - तो फर्स्ट चान्स वाले फास्ट भी चाहिए ना! बाम्बे वालों को विशेष रिटर्न देना पड़ेगा।

(बाम्बे वाले सिल्वर जुबली (Silver Jubilee) मना रहे हैं) सिलवर जुबली भले मनाओ लेकिन स्वयं के संस्कार मिलन की जुबली भी मनाओ। ऐसी जुबली में तो बाप-दादा भी आ सकते। भाषण वाली जुबली में नहीं आयेंगे - संस्कार मिलन की जुबली में आयेंगे। हाँ पहले दिखाओ - बाम्बे एक एग्ज़ाम्पल बने - सदा विजयी, सदा निर्विघ्न, ऐसी जुबली मनाओ। वह जुबली है लोगों को जगाने के लिए

लोगों को भी आजकल अनुभव कराने वाले अनुभवी मूर्तियों की दरकार है। जैसे विदेश में अनुभव कराने का आरम्भ हुआ है - वह अनुभव करते हैं कि कोई रूहानी शक्ति बोल रही है। ऐसी लहर भारत में अनुभव कराओ। ऐसी सिलवर जुबली सुनाओ - टापिक द्वारा टॉप की स्टेज का अनुभव कराओ - ऐसा प्लान कराओ - ऐसा प्लान बनाओ। जैसे मन्दिर जाने से ही वृत्ति परिवर्तन हो जाती है वैसे प्रोग्राम में आते ही कुछ नई अनुभूति अनुभव करें। अल्पकाल के लिए करें तो भी अल्पवाल की छाप स्मृति में रह जाएगी। समझा - अब क्या करना है। अच्छा –

इस मुरली का सार-

1. सुनने का रिटर्न सदा बाप समान सम्पन्न स्वरूप में दिखाओ। अनेक तड़फती हुई आत्माओं के इन्तज़ार को समाप्त करो।

2. जैसे बाप नाम रूप से न्यारा है तो सबसे अधिक नाम का गायन बाप का है-वैसे ही अल्पकाल के नाम से न्यारे बनो तो सदा काल के लिए सबके प्यारे स्वतः बन जावेंगे। नाम और मान के भिखारीपन का अंशमात्र भी त्याग करो।

3. इच्छा-अच्छा कर्म समाप्त कर देती है। इसलिए इच्छा मात्रम अविद्या बनो।